

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editors

**Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya**

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Contents

Section-1 (A) : Jain Philosophy

1. प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान 3-16
प्रो. दामोदर शास्त्री
2. आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त 17-27
प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा
3. आचार्य महाप्रज्ञ-साहित्य में अध्यात्म-विकास की भूमिकाएं 29-42
प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा
4. जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा 43-57
समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा
5. **Number Theory: A Mathematical Solution of Metaphysical Problems in Jaina Āgama** 59-72
Dr Samani Vinay Pragya
6. **Communication and our Relations** 73-84
Dr Samani Aagam Pragya
7. जैन परंपरा में मान्य सूर्य एवं चन्द्रमाँ का स्वरूप 85-95
डॉ. योगेश कुमार जैन
8. पर्यावरण संरक्षण और जैन धर्म 97-103
डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
9. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन 105-119
डॉ. समणी हिमप्रज्ञा
10. सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन 121-141
डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

Section-1 (B) : Experimental Researches on Preksha Meditation

11. **Role of Preksha Meditation in Improvement of Blood Count and Biochemistry of Adults** 145-154
Dr Pradyumna Singh Shekhawat

आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त

*प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

सारांशिका

प्रायश्चित्त के दस भेदों में दूसरा भेद है प्रतिक्रमण। दोष का पुनः सेवन न करने का संकल्प तथा उसके योग्य प्रायश्चित्त का वहन करना प्रतिक्रमण है। प्रतिक्रमण एक ऐसी साधना है, जिसमें साधक पीछे लौटकर अपने दोषों का दर्शन करके उसकी शुद्धि का प्रयत्न करता है। अतः प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रतिक्रमण का महत्त्व इस बात से द्योतित होता है कि साधु को प्रातः और सायं समय प्रतिक्रमण करना अनिवार्य है।

प्रतिक्रमण करने से आत्मा उजली होती है। पूर्वकृत कर्म निर्जरित होते तथा नये कर्मों के आगमन पर रोक लगा दी जाती है। इस शोध-लेख में "प्रतिक्रमण" जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर आगम-व्याख्या साहित्यों में जो नए तथ्य प्राप्त हो सकते हैं, उसे उजागर किया गया है और विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सम्बद्ध शब्द : आगम-व्याख्या साहित्य, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त।

*प्रोफेसर, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनू 341306 (राजस्थान)